शेख़ फ़रीद - सबद ३

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥

रागु सूही, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, ७९४

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥
बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥
मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥
तै साहिब की मै सार न जानी ॥
जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥१॥ रहाउ ॥
काली कोइल तू कित गुन काली ॥
अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥
पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥
जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥२॥
विधण खूही मुंध इकेली ॥
ना को साथी ना को बेली ॥
करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥३॥
वाट हमारी खरी उडीणी ॥
खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥
उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥
सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥

सार: ध्यान तब भटकता है जब मन उस चीज़ से हटता है जिस पर वास्तव में आपका ध्यान केंद्रित होना चाहिए। जीवन के सबसे अच्छे पलों को अज्ञानता में बर्बाद करना जो वास्तव में महत्वपूर्ण है उसके बारे में जागरूक न होना या उस पर ध्यान न देना बाद में चिंतन और पछतावे का कारण बन

सकता है । संतुष्टि का अनुभव करने के लिए सबसे अहम चीज़ों को प्राथमिकता देना ज़रूरी है । यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रत्येक क्षण आपके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आपके मूल्यों के अनुरूप हो।

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥
जलते और तड़पते हुए मैं अपने हाथों को कसमसाता हूँ, यह जिज्ञासा की तीव्रता को दर्शाता है।

बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
मैं सर्वव्यापी जागरूकता का अनुभव करने की खोज में बावला सा हो गया हूँ।

बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
यदि मन में सर्वव्याप्तता को लेकर कोई शंका है।

मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥
तब यह उस सर्वव्यापी ऊर्जा में किसी अपूर्णता के बजाय मेरे समझ की कमी को दर्शाता है। (१)

तै साहिब की मै सार न जानी ॥
मैं सर्वव्यापी जागरूकता की सर्वोच्चता को समझ नहीं सकता।

जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥१॥ रहाउ ॥
अज्ञानता में जीवन के प्रमुख समय को बर्बाद करने से बाद में पछतावा होता है। (१)(विराम)

काली कोइल तू कित गुन काली ॥
काली कोइल आपकी सुरीली आवाज़ के बावजूद आपको शारीरिक रूप से अनाकर्षक क्यों माना जाता है?

अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥
अपने प्रेमी से अलग होने के दर्द ने आपको अनाकर्षक बना दिया है। यह चेतना से अलगाव की पीड़ा का प्रतीक है।

पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥
दुल्हन अपने दूल्हे के बिना शांति कैसे पा सकती है? यह प्रश्न प्रतीकात्मक रूप से सुझाव देता है कि आत्मा (दुल्हन) और परम जागरूकता (दूल्हा) के मिलन के बिना सद्भाव नहीं हो सकता।

जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥२॥
जब विवेक का आशीर्वाद मिलता है, तब व्यक्ति को सर्वव्यापी जागरूकता की चेतना का बोध होता है। (२)

विधण खूही मुंध इकेली ॥
जब एक साथी खो जाता है तब दूसरा अकेलापन महसूस करता है, यह सर्वव्यापी चेतना के साथ संबंध खोने के प्रभाव को दर्शाता है।

ना को साथी ना को बेली ॥
यहां कोई सच्चे साथी या मित्र नहीं हैं जिसका अर्थ है कि एकमात्र निरंतर साथी सर्वव्यापी चेतना है।

करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥
सर्वव्यापी जागरूकता को अपनाएं जो आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध लोगों की संगति में मार्गदर्शन करती है।

जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥३॥
जब मैं चारों ओर देखता हूँ, तो मुझे हर व्यक्ति में सर्वव्यापी ऊर्जा अपने साथी के रूप में दिखाई देती है। (३)

वाट हमारी खरी उडीणी ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा को खोजने का मेरा मार्ग चुनौतीपूर्ण है।

खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥
यह दोधारी तलवार की तुलना में भी अत्यधिक संकीर्ण और तेज़ है।

उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥
यही मेरा मार्ग है। कठिन होने पर भी यह बेहद फ़ायदेमंद है।

सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥
सेख फरीद सलाह देते हैं कि ख़ुद को इस मार्ग पर शीघ्र समर्पित कर देना चाहिए। (४)(१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद समाज में शांति और एकता के गहरे संबंध को समझाते हैं। उनका मानना है कि सामूहिक भलाई के लिए सच्चा और स्थायी मेलजोल आत्मचिंतन से संभव है। यदि कोई स्वयं को इस सर्वोच्च प्रक्रिया के प्रति शीघ्र समर्पित कर देता है, तो आत्म-खोज की यात्रा एक महत्वपूर्ण क्षण को चिह्नित करती है, जो अज्ञान से ज्ञान की ओर संक्रमण का मार्ग प्रशस्त करती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com